भाकृअनुप
ICAR

काजरी समाचार

CENTRAL ARID ZONE RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

वर्ष: 2014-2015 सं. 1, अप्रैल-जून

इस अंक में

शोध गतिविधियाँ
महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन
बैठकें / सभाएं
कार्यशालाएं
प्रदर्शनियाँ
नियुक्तियाँ
स्थानान्तरण
विदेश भ्रमण
सेवानिवृत्तियाँ
शोक

भविष्य के कार्यक्रम

कृषि शिक्षा दिवस : अगस्त 7

''सूखे क्षेत्र में कुशल आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और बागवानी उत्पादों का विपणन'' पर मॉडल शिक्षण कार्यक्रम : सितम्बर 1-8

क्षेत्रिय समिति - 6 की बैठक: सितम्बर 12-13

किसान मेला एवं नवाचार दिवस: सितम्बर 24

निदेशक की कलम से.....

भारत में शुष्क क्षेत्रों में भूमि क्षरण एक बड़ी समस्या है। खाद्य सुरक्षा के संदर्भ में, यह समस्या चुनौती बनती जा रही है। इस प्रसंग में मृदा स्वास्थ्य का निरंतर रखरखाव महत्वपूर्ण है। अब यह महसूस किया जा रहा है कि हवा और पानी की गुणवत्ता की रक्षा की तरह, मिट्टी की गुणवत्ता की रक्षा करने के लिए एक मौलिक राष्ट्रीय नीति आवश्यक है। मिट्टी की गुणवत्ता प्रबंधन के छह आवश्यक घटक हैं: मिट्टी के कार्बनिक पदार्थ में वृद्धि, मिट्टी के संरक्षण और संवर्धन के लिए मृदा सतह को वनस्पति द्वारा आच्छादित रखना, खेती प्रणाली में विविधता, मिट्टी के संघनन को रोकना, कीटों और पोषक तत्त्वों का कुशल प्रबंधन, अनावश्यक अत्यधिक जुताई से बचना।

मिट्टी की गुणवत्ता उसके भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों का समागम है। मिट्टी उपजाऊ हो सकती है लेकिन उत्पादक नहीं भी हो सकती है। इसलिए भूमि की उत्पादकता को सीधे नहीं मापा जा सकता, लेकिन इसके विशेषताओं में परिवर्तन को मापने से निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। इसके लिए दिए गए स्थान और भूमि उपयोग (चरागाह, फसल भूमि, वन भूमि, कृषि वानिकी आदि) आधारित मृदा के न्यूनतम आँकड़े जो मापने के लिए आसान और परिवर्तन करने के लिए भी संवेदनशील हो, को विकसित किया जाना चाहिए। इस तरह के एक सूचक के विकास में मिट्टी के रासायनिक, शारीरिक और जैविक गुणवत्ता को ध्यान में रखना चाहिए।

अच्छी मिट्टी की गुणवत्ता संकेतकों के विकास के अलावा, भूमि क्षमता का उपयोग कर भूमि उपयोग रणनीति, मिट्टी में कार्बन का अंश, स्थान विशिष्ट पोषक तत्त्व प्रबंधन, मिट्टी के जैविक विविधता में सुधार, समस्याग्रस्त मिट्टी और बंजर भूमि के पुर्नवास व सुधार, जैसे अनुसंधान के मुद्दों में अधिक निवेश करने की जरूरत है। साथ ही, सूक्ष्म स्तरों पर भूमि प्रबंधन में भागीदारी के दृष्टिकोण को बढ़ाने की जरूरत है।

- मुरारी मोहन रॉय

शोध गतिविधियाँ

पिम्पा (*केरूलूमा इडयूलिस*): थार मरुस्थल का एक परम्परागत औषधिय पादप

पिम्पा (केरूलूमा इडयूलिस, कुल–एसकेलपिडिएसी), एक सूखा प्रतिरोधी मांसलोद्भिद बहुवर्षिय शाकीय पादप है। पिम्पा के पौधो की वृद्धि प्रायः सूखे, हलकी, गहरी रेतीली मृदाओं में मुरट घास के गुच्छे के अन्दर अधिक पायी गयी है। परन्तु यह मरूस्थलीय झाड़ियों के साहचर्य में भी मिलता है। जैसलमेर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में पिम्पा की सब्जी तथा इसका अचार भी बनाया जाता है। इसका ऊपरी गूदेदार भाग जो कि स्वाद में खटास लिये होता है, ताजा कच्चा खाया जाता है। स्थानीय वासियों द्वारा ऐसा माना जाता है कि ताजा पिम्पा खाने से प्यास शांत होती है, साथ ही यह कब्ज व दूसरी पाचन सम्बंधी विकारों में लाभदायक है। यह हड्डियों के लिए लाभकारी एवं रक्तशोधक माना जाता है। यह खनिजो का भी अच्छा श्रोत माना गया है। पिम्पा को पालतु व वन्य पशु भी पसंद करते हैं। पालतु पशुओं में यह ऊंटों व बकरियों द्वारा सर्वाधिक पसंद किया जाता है, लेकिन गाय व भेड़ इसे कम खाती हैं।

पिम्पा (*केरूलूमा इडयूलिस*) का नैसर्गिक एवं नजदीक का दृश्य

चरागाह आच्छादन के क्षरण, अत्यधिक चराई दबाव तथा क्षेत्र में भूउपयोग बदलाव के कारण, पिम्पा की संख्या काफी घट गयी है। अब यह जैसलमेर जिले में कुछ रेतीले स्थानों में ही उपलब्ध है। इससे पश्चिमी राजस्थान में इसके प्राकृतिक क्षेत्रों में संकट की स्थिति है। इसके पौषक व औषधिय गुणों हेतु विस्तृत शोध की आवश्यकता है। साथ ही इसकी लघुस्तर में रेतीले क्षेत्रों में खेती की सम्भावना को तलाशा जा सकता है।

- जयप्रकाश सिंह, सुरेश कुमार, कन्नन वेंकेटशन एवं कुल्लोली रविकिरण निंगाप्पा

भारतीय जरबिल (*टटेरा इण्डिका*) शुष्क क्षेत्र में पाया जाने वाला एक प्रमुख कृन्तक

भारतीय जरबिल या मृग चूहा, टटेरा इण्डिका, पश्चिमी राजस्थान में कृषि में नुकसान करने वाला सबसे प्रभावी चूहा है। इसकी तीन उपप्रजातियों में से *टटेरा इण्डिका हार्डविकी* इस क्षेत्र में पाया जाता है। पारिस्थितिकी वितरण की दृष्टि से यह प्रजाति राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों से अर्ध शुष्क क्षेत्रों तक फैली हुई है। हालांकि *टटेरा इण्डिका* खेतों में पायी जाने वाली एक प्रजाति है किन्तु जोधपुर व बीकानेर शहरो में यह रिहायसी क्षेत्रों में भी देखे गये हैं जो की इस प्रजाति के घरेलू व्यवहार अनुकूलन की तरफ संकेत करता है।

शुष्क क्षेत्रों में आम तौर पर यह जरबिल सर्दियों में घास, झाडियाँ व वृक्षों के बीज खाता है, गर्मियों में जब वनस्पति की कमी हो जाती है, यह तने व प्रकंद खा कर जीवन यापन करता है। हालांकि मानसून के मौसम में यह पौधों के सभी हरे भागों को खाते हैं।

यह जरबिल संपूर्ण वर्ष प्रजनन करता है किन्तु फरवरी व अगस्त माह में इसका प्रजनन चरम पर होता है। प्रत्येक प्रसव में 28.2 दिवस के गर्भकाल के साथ बच्चों की संख्या 1 से 9 तक होती है तथा सम्पूर्ण वर्ष में एक मादा 17.72 तक बच्चे पैदा कर सकती है। *टटेरा इण्डिका* व *मेरियोनिस हरियानी* द्वारा शुष्क क्षेत्रों में विभिन्न फसलों में 2 से 7 प्रतिशत तक का नुकसान होता हैं। कृषि में किए जाने वाले नुकसान हेतु इस चूहे को नियंत्रण करना आवश्यक है।

- विपिन चौधरी

थारपारकर गौवंश पर कांटेरहित थोर मिश्रित चारे का प्रभाव

बदलते जलवायुवीय परिवेश एवं थार मरूस्थल में हरे चारे की कमी को पूरा करने के लिए नये विकल्पों की खोज एवं उनकी पशुओं के लिए उपयोगिता आज के समय अनिवार्य होता जा रहा है। इसी संदर्भ में काजरी जोधपुर पर कांटेरहित थोर मिश्रित चारे के प्रभाव का अध्ययन थारपारकर गौवंश पर किया गया। इस अध्ययन में एक वर्ग के मवेशियों को धामन घास की सिफारिश मात्रा तथा 1.05 किलो दाने के साथ प्रति पशु को कुतर की गई 2.5 किलो थोर की पत्तियां दी गई तथा दूसरे वर्ग को थोर नहीं खिलाया गया। परीक्षण के परिणामों से ज्ञात हुआ कि जिन मवेशियों को थोर मिश्रित चारा दिया गया था उनमें शुष्क पदार्थ ग्रहण की दर 0.18 किलो प्रति पशु कम हुई। साथ ही इस वर्ग के मवेशियों में प्रतिदिन पानी ग्रहण की दर में भी 7.43 लीटर तक की गिरावट दर्ज कि गई। जबकि केवल घास तथा दाने पर आश्रित पशुओं में दैनिक जल ग्रहण दर 22.73 लीटर प्रति पशु थी। थोर खिलाने से पशुओं की पाचक क्षमता 55.95 से 70.43 प्रतिशत तक बढ गई।

- बसंत कुमार माथुर

पूरक पशु आहार बट्टिका का पशुओं के दुग्ध उत्पादन पर प्रभाव

नागौर जिले के 12 चयनित गांवों में गाय एवं भैंस को 250 ग्राम पशु आहार बट्टिका तथा बकरियों को पशु आहार मिश्रण 100 ग्राम प्रतिदिन खिलाया गया। पशु आहार बट्टिका खिलाने से गायों का औसत दुग्ध उत्पादन 7.70 प्रतिशत तथा भैंस में 5.80 प्रतिशत प्रतिदिन बढ़ गया। दुग्ध उत्पादन के लाभ : लागत का अनुपात भैंस (4.48) में गायों की तुलना में अधिक पाया गया। इसी प्रकार पशु आहार मिश्रण खिलाने से बकरियों के दुग्ध उत्पादन में 1.4 से 1.8 किलो प्रतिदिन की बढ़ोतरी दर्ज की गई। दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी बकरियों में 14 प्रतिशत रही।

- मावजी पाटिदार एवं राम नारायण कुमावत

राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों से पशुओं के प्रवासन का अध्ययन

जब राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में चारे एवं पानी की उपलब्धता विषम परिस्थितियों के कारण कम होने लगती है तो इन क्षेत्रों के चरवाहे अपने पशुधन के साथ पड़ौसी राज्यों में प्रवासन पर चले जाते है। इनके पशुओं में गायें 35–220 तक तथा भेड़–बकरियों 42–250 तक होती हैं। काजरी द्वारा किये गये अध्ययन से पता चलता है कि प्रवासन मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है : (1) स्थानीय/अल्पकालिक; (2) बड़े झुण्ड का अंशकालिक प्रवासन तथा (3) स्थायी प्रवासन में चरवाहे अपने मवेशियों के साथ पड़ोसी राज्यों में निवास करते हैं, प्रवासन के दौरान चरवाहे अपने पशुओं के साथ पूर्व–निर्धारित इलाके से गुजरते हैं। पशु औसतन प्रतिदिन पानी के लिए 8.71 किलोमीटर चलते है। कभी–कभी पानी का स्रोत नहीं मिलने पर मवेशियों को 18–22 किलोमीटर तक भी चलना पड़ता है। प्रवासन में पशुपालकों को विभिन्न समस्याऐं आती हैं। जिनमें प्रमुख हैं– संस्थागत पशु–स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, उचित मूल्य पर पशु औषधियों की कमी और असामाजिक तत्वों द्वारा उत्पीड़न।

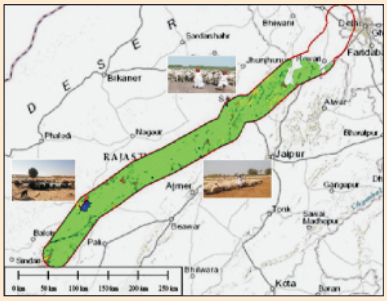

जन–भागीदारी द्वारा सार्वजनिक चारागाहों की उत्पादकता में बढ़ोतरी, चल–पशु चिकित्सा सेवा तथा उत्तम पशु औषधि की उपलब्धता तथा विधि व्यवस्था को कायम करके इन प्रवासित पशुपालकों के पशुधन की उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है।

- अरुण कुमार मिश्रा

बिना मौसम की बारिस से अतिरिक्त आय

पुरखावास गाँव में खरीफ की फसल की कटाई के बाद सितम्बर 2013 के अंतिम सप्ताह में काफी जोरदार बरसात हुई। पुरखावास गाँव में केवल खरीफ के मौसम में ही फसल ली जाती है। रबी के मौसम में खेत खाली पड़े रहते हैं। जिसमें आवारा जानवर घूमते रहते हैं। इस मौके पर कृषि विज्ञान केन्द्र, जोधपुर नें पुरखावास गाँव में किसानों के साथ वार्तालाप कर बिना मौसम की बारिस का लाभ लेने के लिए प्रोत्साहित किया। किसानों के सहयोग से खेतों की जुताई करके नमी का संरक्षण

किया गया व तारामीरा की प्रजाति आर.टी.एम 314 की बुवाई कराई गई। जिससे औसतन 500 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर उपज प्राप्त की गई। जिसकों 28/– रूपये प्रति कि.ग्रा. के हिसाब से बेचकर 14000/– रूपये अतिरिक्त आय प्राप्त हुई।

- अरुण कुमार मिश्रा, रेवत राम मेघवाल एवं मनोज कुमार

सब्जी उत्पादन : एकीकृत कृषि पद्धति के लिये एक प्रभावशाली कदम

भोजन में सब्जियों के महत्व एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जोधपुर जिले की बालेसर तहसील के उटाम्बर गांव में सब्जियों की पैदावार बढ़ाने एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए किसानों के खेतों में प्रदर्शन लगाये गये। गांव का लगभग 18 प्रतिशत क्षेत्र सिंचित है। खरीफ ऋतु में काली तुरई व भिण्डी तथा रबी ऋतु में पालक, मूली, मटर एवं टमाटर की फसल उन्नत तकनिकियों के द्वारा किसानों के खेतों में उगाई गयी। खरीफ ऋतु में उगायी जाने वाली सब्जियों में सबसे अधिक शुद्ध लाभ ₹ 82000/– प्रति हैक्टेयर भिण्डी की खेती द्वारा प्राप्त किया गया। लेकिन सबसे अधिक लाभ : लागत अनुपात (3:10) काली तुरई के द्वारा प्राप्त की गई। रबी ऋतु में उगाई जाने वाली फसलों में मूली की खेती के द्वारा सबसे अधिक शुद्ध लाभ (₹ 110500 प्रति हैक्टेयर) एवं लाभ : लागत अनुपात (4:25) प्राप्त की गई। टमाटर की खेती द्वारा शुद्ध लाभ ₹ 84000/– प्रति हैक्टेयर तथा लाभ : लागत अनुपात 2:00 प्राप्त की गई।

- सोमा श्रीवास्तव एवं राजसिंह

अन्य गतिविधियां

महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन

कृषि उत्पादों को औद्योगिक क्षेत्र में बढ़ावा देने एवं वृहद स्तर पर इनके वाणिज्यिकरण के लिए 5 मई को काजरी में **औद्योगिक दिवस** आयोजित किया गया। अरावली प्रबंधन संस्थान, जोधपुर के डा. वरूण आर्य, मुख्य अतिथि थे। डॉ सुरेश कुमार, डॉ जीवन चन्द्र तिवारी, डॉ पीयूष चन्द्र पाण्डे, डॉ जगदीश चन्द्र तरफदार ने संस्थान की विभिन्न तकनीकियां, जिनकी वाणिज्यिक होने की संभावनाऐं है के बारे में जानकारी दी। इसमें उद्योगों एवं गैर सरकारी संस्थाओं के करीब 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार के तहत काजरी में स्थित मरूस्थलीय पर्यावरण सूचना केन्द्र द्वारा 5 जून को **विश्व पर्यावरण दिवस** मनाया गया। इस अवसर पर आफरी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ गेंदा सिंह एवं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के प्रोफेसर पवन कसेरा ने जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, उपाय तथा पर्यावरण के संरक्षण–विकास पर व्याख्यान दिया। डॉ राम कृष्ण भट्ट, डॉ चन्द्र भूषण पाण्डे तथा अन्य वैज्ञानिकों ने पर्यावरण विकास पर चर्चा की। इसमें 100 वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

17 जून को **विश्व मरु प्रसार रोक दिवस** मनाया गया। इस अवसर पर डॉ कपिल देव शर्मा, पूर्व सदस्य (तकनीकी विशेषज्ञ जल संरक्षण) वर्षा आधारित कृषि क्षेत्र प्राधिकरण, योजना आयोग भारत सरकार ने जल क्षेत्र में मौसमीय परिवर्तन अनुकूलन बनाने हेतु व्याख्यान दिया। अध्यक्षता काजरी निदेशक डॉ मुरारी मोहन रॉय ने की। पुस्तकालय प्रभारी एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ राकेश सरन त्रिपाठी ने बताया कि एनविस द्वारा मरू प्रसार से संबंधित डेटा बेस तैयार किया गया है जो क्षेत्र के विकास में काफी उपयोगी है। इसमें संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

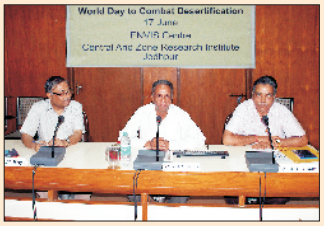

बैठकें/सभाएं

संस्थान शोध परिषद की बैठक दिनाँक 21 से 26 अप्रैल, तक आयोजित की गई। सभा में नये शोध कार्यों हेतु परियोजनाएं स्वीकृत की गई तथा जिन परियोजनाओं में कार्य चल रहा है एवं जिनके कार्य पूर्ण हो चुके है उनकी रिपोर्ट प्रस्तुत की गई ।

शीत एवं उष्ण रेगिस्तान नेटवर्क परियोजना की पाँचवी सहभागीता बैठक दिनांक 12–13 जून को आयोजित हुई। अध्यक्षता काजरी निदेशक डॉ मुरारी मोहन रॉय ने की। उन्होंनें प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग एवं इन इलाकों में रोजगार के अवसर बढाने तथा क्षेत्र के बाशिन्दों को सशक्त करने की सलाह दी। परियोजना समन्वयक (शीत) डॉ जीवन चन्द्र तिवारी एवं परियोजना समन्वयक (उष्ण) डॉ प्रवीण कुमार ने परियोजना की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। बैठक में कश्मीर, पालनपुर, अल्मोड़ा, हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, हैदराबाद, आन्ध्रप्रदेश के वैज्ञानिकों के करीब 25 अधिकारियों ने भाग लिया।

कार्यशालाएं

राजस्थान में प्राकृतिक संसाधन के मूल्यांकन के लिए भौम्याकृतिक मानचित्रण विषय पर दिनाँक 6–8 मई तक तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें अंतरिक्ष विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, आईआईटी, खड़गपुर, काजरी तथा राज्य के विभिन्न महाविद्यालयों के अधिकारियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को जैसलमेर के मरूस्थलीय टीलों, पथरीली जमीन, क्षारीय भूमि आदि के बारे में बालेसर, देचु, क्षेत्रावा, लांवा, पोकरण, चांदन, भोजका, बासनपीर आदि गाँवों में भ्रमण के दौरान जीवन्त जानकारी दी गई। कार्यक्रम में 50 वैज्ञानिकों, शोधार्थियों एवं व्याख्याताओं ने भाग लिया।

22 मई को अन्तर्राष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान अर्द्ध–शुष्क एवं उष्ण कटिबंध (इक्रीसेट) हैदराबाद एवं शुष्क भूमि परियोजना के तहत काजरी एवं ग्रामीण विकास विज्ञान समिति ग्रेविस, जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में **सीजीआईएआर–शुष्क भूमि पद्धतियां, शुष्क क्षेत्रों में कृषि विकास एवं खाद्य सुरक्षा एवं जीवनयापन के लिए एकीकृत कृषि उत्पादन पद्धतियों पर द्वितीय नवोन्मेषी प्लेटफार्म कार्यशाला** आयोजित हुई। इसमें इक्रीसेट के वैज्ञानिक डॉ शैलेन्द्र कुमार, डॉ टी. रेमीलन ने पश्चिमी राजस्थान के जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर के आठ गाँवों में चल रही परियोजनाओं पर चर्चा की। अध्यक्षता काजरी निदेशक डॉ मुरारी मोहन रॉय ने कहा कि इन क्षेत्र के वाशिन्दों के जीवन में सुधार हेतु उन्हें रोजगार एवं अच्छा पोषक आहार एवं पीने को शुद्ध जल मिले। क्षेत्रीय परियोजना निदेशक डॉ युद्धवीर सिंह, डॉ जीवन चन्द्र तिवारी, ने परियोजना पर चर्चा की। कार्यक्रम में कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र, आफरी, ग्रेविस, एनएसी आदि विभागों के लगभग 100 अधिकारियों ने भाग लिया।

काजरी, जोधपुर एवं शुष्क भूमि क्षेत्रों में कृषि अनुसंधान के लिए अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र (इर्काडा) के संयुक्त तत्वावधान में **पशुधन प्रव्रजन** विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला दिनाँक 29 मई को आयोजित हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता काजरी निदेशक डॉ मुरारी मोहन रॉय ने की। उन्होंनें कहा कि राजस्थान में पशुपालन व्यवसाय वृहद स्तर पर है। पशुओं तथा पशुपालकों के जीवन में सुधार लाने के लिए पशुपालकों की सुरक्षा, उसका विश्लेषण करना तथा उसी के आधार पर दिशा निर्देश तैयार करना नीति निर्माण हो। इर्काडा जोर्डन के वैज्ञानिक डॉ मुनीर लाइची ने विश्व के विभिन्न देशों में पशुपालकों के जीवन में सुधार लाने तथा अच्छा प्रबन्धन के बारे में विचार व्यक्त किये। विभागाध्यक्ष डॉ अरूण कुमार मिश्रा ने परियोजना के अन्तर्गत किये गये कार्यो के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कायक्रम में राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ महेश कटारा, केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड के निदेशक कृष्ण कान्त गोयल ने अपने विचार व्यक्त किये। पाली, जोधपुर, बाड़मेर, जालोर जिले के करीब 50 चरवाहों ने इसमें भाग लिया।

प्रर्दशनियाँ

1–3 मई को द्वितीय राजस्थान विज्ञान कांग्रेस में संस्थान द्वारा, डॉ केदार नाथ मोदी विश्वविद्यालय, निवाई, टोंक में प्रदर्शनी आयोजित की गई।

5 मई को संस्थान में उद्योग दिवस पर प्रदर्शनी आयोजित की गई।

नियुक्तियाँ

श्री अभिषेक कुमार, वैज्ञानिक (कृषि वानिकी), 5.4.2014 से

कुमारी किर्थिका अरुमुगम, वैज्ञानिक (कृषि वानिकी), 7.4.2014 से

श्री राहुल देव, वैज्ञानिक (आर्थिक वनस्पति विज्ञान), 7.4.2014 से

श्री दीपक कुमार गुप्ता, वैज्ञानिक (पर्यावरण विज्ञान), 7.4.2014 से

डॉ अनिल कुमार शुक्ला, अध्यक्ष, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, पाली, 6.6.2014 से

स्थानान्तरण

डॉ अजयवीर सिंह सिरोही, वरिष्ठ वैज्ञानिक (एल.पी.एम.), पद्दोन्नति पर, 28.04.2014 (अपरान्ह) को पी.डी.सी. मेरठ गए

डॉ खेम चन्द, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि अर्थशास्त्र), विभागाध्यक्ष पद पर, 30.05.2014 (अपरान्ह) को आई.जी.एफ.आर.आई., झांसी गए

विदेश भ्रमण

डॉ कन्नन वेंकेटशन, वैज्ञानिक (आर्थिक वनस्पति विज्ञान), ने ''एग्रो इकोलोजीकल मॉनीटोरिंग'' विषय पर अप्रैल 5–13 के दौरान अमान (जॉर्डन), में प्रशिक्षण लिया।

डॉ जीवन चन्द्र तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक (वानिकी), ने ''रिव्यु एण्ड प्लानिंग मीटिंग फॉर ड्राईलैण्ड सिस्टम्स सी.आर.पी.–1.1 लाईवलीहुड–साउथ एशिया'' विषय पर जून 4–6 के दौरान दुबई में आयोजित बैठक में भाग लिया।

सेवानिवृत्ति

अप्रैलः श्री मोहन सिंह चौधरी, तकनीकी अधिकारी; श्री प्रदीप कुमार जोशी, तकनीकी अधिकारी; श्री दत्ता दीन सैनी, वरिष्ठ तकनीशियन; श्री रणछोर, एस.एस.एस.; श्री दीपा राम, एस.एस.एस.

मईः श्री बुधाराम, तकनीकी अधिकारी; श्री चन्द्रपाल सिंह, तकनीकी अधिकारी; श्री मदन लाल, तकनीकी सहायक; श्रीमती मीरा, एस.एस.एस.

जूनः डॉ सतिश कुमार लोढ़ा, प्रधान वैज्ञानिक; श्री अचल सिंह, ए.ए. ओ.; श्री प्रमेश चन्द्र बोहरा, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी; श्री गंगा सिंह खीची, तकनीकी अधिकारी; श्री अब्दुल समद, तकनीकी अधिकारी; श्री जेरा राम, तकनीकी अधिकारी; श्री सत्यनारायण चौहान, तकनीशियन; श्रीमती संदनी, एस.एस.एस.

शोक

श्री नारायण सिंह, तकनीकी सहायक; 4 जून

श्री आईदान सिंह, एस.एस.एस.; 7 जून

प्रकाशक : निदेशक, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर 342 003
सम्पर्क : +91–291–2786584 (कार्यालय) +91–291–2788484 (निवास) +91–291–2788706 (फैक्स)
ई–मेलः director@cazri.res.in; वेबसाईटः http://www.cazri.res.in
सम्पादन समिति : शर्मिला रॉय, धर्म वीर सिंह, नव रतन पंवार, प्रियव्रत सांतरा एवं राकेश पाठक
तकनीकी सहयोग : श्री बल्लभ शर्मा

Printed by M/s Evergreen Printers, Jodhpur